जब पावन ध्वनि ने संसार को जाग्रत किया

एज़्टेक संस्कृति के, आकाश और रात्रि के भयंकर देवता, टेज़्काट्लिपोका ने उस शान्त, निर्जन क्षेत्र की धरती पर क़दम रखा। उनकी नज़र जहाँ भी गई, हर कहीं एक रिक्त सन्नाटे से उपजी, निष्क्रिय नीरसता ही पसरी हुई थी। स्त्रियाँ हों या पुरुष, सभी के जीवन के दिन एक के बाद एक, बस यूँ ही बीत रहे थे; उस जीवन में न आनन्द था, न रस और न ही जीवन के उद्देश्य का कोई उच्च भाव। न कहीं कोई खिलखिलाहट थी, न पक्षियों का कलरव, यहाँ तक कि किसी कीड़े-मकोड़े की आवाज़ भी नहीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो हर चीज़ का बस अस्तित्व भर है और इस निःशब्दता में देवताओं को तो कोई याद ही नहीं करता था।

"बहुत दिनों से यही हाल चल रहा है और अब वक़्त आ गया है कि इसका कोई उपाय किया जाए," टेज़्काट्लिपोका ने मन ही मन तय कर लिया। आख़िरकार वे सब कुछ देखने वाले, दिव्यद्रष्टा, आकाश के देवता जो ठहरे। उन्हें बिलकुल निश्चित रूप से मालूम था कि धरती को किसने सताया है और क्या किया जाना चहिए—पर नहीं, यह आसान नहीं था।

जैसे ही उन्होंने धुआँ छोड़ा, उनके चेहरे की काली धारियाँ इतने ज़ोर-से फड़क उठीं कि आकाश पर सिलेटी और उदासी भरे नीले रंग की सिलवटें पड़ गईं। *ओह, ये वायुदेवता, क्वेट्ज़ाल्कोट्ल की जब भी ज़रूरत होती है तब वे कहाँ चले जाते हैं? उनके पास अत्यन्त वेग से चलने की जो क्षमता है, वह किसी के भी पास नहीं। धरती को इसकी मनहूस चुप्पी से मुक्ति दिलाने के लिए मेरी जो योजना है, उसके लिए वायुदेवता की यह क्षमता बहुत महत्त्वपूर्ण है! हो न हो, वे समुद्र को मथने में व्यस्त होंगे क्योंकि अभी समुद्री तूफ़ान का समय जो चल रहा है,* टेज़्काट्लिपोका ने बैचैनी से सोचा।

उसी समय, सर्पिल पंखों से विभूषित वायुदेवता क्वेट्ज़ाल्कोट्ल, बादलों के पीछे से वहाँ प्रकट हुए और अपने गीले पंखों को झकझोरते हुए ज़ोरदार गर्जना के साथ उन्होंने, विचारों में डूबे हुए टेज़्काट्लिपोका को चौंका दिया।

"क्या ऐसा करना सच में ज़रूरी था?" अपनी फूली हुई, काली आँखों को चमकाते हुए आकाशदेवता ने पूछा।

"देखिए, आकाशदेव, मैं लहरों को दौड़ाने में सचमुच व्यस्त हूँ। इसलिए, आपने मुझे क्यों बुलाया है यह बताइए? अगर यह अत्यावश्यक न हो, तो मैं आपसे बाद में ही मिल पाऊँगा।"

आकाशदेव ने गहरी साँस ली। "वायुदेव, आप घमण्ड तो नहीं दिखा रहे हैं? अब, शेख़ी मारना बन्द कीजिए और बताइए क्या आपको कुछ सुनाई दे रहा है?"

क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने अपने पंखिल कानों पर ज़ोर डाला। “मुझे तो कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा,” उन्होंने कहा।

“बिलकुल! कुछ भी नहीं। एक भी संगीत-स्वर का गुंजन नहीं, मन को खुश करने वाली कोई मीठी ध्वनि नहीं, न ही हमारी वन्दना व स्तुति करने वाले कोई गीत ही हैं।”

सामने फैले क्षितिज को ग़ौर से देखते हुए टेज़्काट्लिपोका की आँखें फैल गईं और उन्होंने घोषणा की, “संसार को संगीत के बीज की आवश्यकता है, ताकि समस्त तत्त्वों में ताज़गी भर जाए, ताकि वे जाग्रत हो जाएँ व उनका विकास हो सके।”

“हाँ, आकाशदेव आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। परन्तु इसे दुरुस्त करने के लिए हम क्या कर सकते हैं?”

“वायुदेव क्या आप मेरी बात का विश्वास करेंगे, यदि मैं आपको बताऊँ कि सूर्यदेवता, टोनाट्यू के पास एक ऐसा भवन है जहाँ अनेकानेक दिव्य संगीतज्ञ हैं जो सुबह से शाम तक उनके लिए संगीत-वादन करते रहते हैं? उनका जीवन कितना अलग होगा न! कितना आनन्दमय, कितना शान्तिमय! फिर भी वे हमसे उन चीज़ों को बाँटना नहीं चाहते,” टेज़्काट्लिपोका ने कहा।

“नहीं बाँटेंगे? उनकी इतनी हिम्मत कि वे इतने स्वार्थी हो जाएँ,” क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने सहमत होते हुए कहा।

“सचमुच! मैं चाहता हूँ कि आप सूर्यदेव के भवन जाएँ और उनके सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञों व दिव्य वाद्यों को पृथ्वी पर वापस ले आएँ। याद रखिए, हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम दुनिया को जगाएँ। ऐसा *होना ही* चाहिए। हमें संगीत की ज़रूरत है।” टेज़्काट्लिपोका ने स्पष्ट कह दिया।

वायुदेव उछलकर सावधान हो गए। “आकाशदेव, अब और कुछ मत कहिए! बस मुझे यह बता दीजिए कि मुझे करना क्या है। मैं वह काम अवश्य करूँगा और उन संगीतज्ञों को पृथ्वी पर ले आऊँगा।”

“तो फिर ध्यान से सुनिए : सूर्य तक पहुँचने मात्र के लिए भी आपको मेरे विश्वासपात्र और कुशल सहायकों की आवश्यकता होगी—व्हेल मछली, जलपरी और कछुआ। वे एक सेतु बना सकते हैं जिससे कि आप लौकिक और पारलौकिक दोनों ही क्षेत्रों को पार कर सकेंगे,” टेज़्काट्लिपोका ने समझाया।

तुरन्त वायुदेव समुद्र की ओर दौड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने तीन जादुई सहायकों का आवाहन किया और आकाश तक जाने वाला एक मज़बूत सेतु बाँधने का आदेश दिया। अपनी अलौकिक शक्तियों

के साथ, इन तीनों ने अपने-अपने स्वरूपों को आपस में गुँथ लिया और एक मज़बूत रस्सी का निर्माण किया। यह रस्सी घूमती गई और बादलों के पार बहुत ऊपर तक बढ़ गई। फिर वह एक अटूट सेतु में बदल गई जिसका विस्तार सूर्य तक था।

वायुदेवता ने खुशी से एक गोल चक्कर लगाया और अपने शानदार पंखों को फैलाकर ऊपर स्वर्ग की ओर उड़ चले। मार्गदर्शन करने के लिए सेतु का उपयोग करते हुए, वे चढ़ते गए, उड़ते गए; और जल्द ही ऊपर पहुँच गए। दूर उन्हें सूर्यदेवता के निवास-स्थान का जगमगाता द्वार दिखाई दिया। फिर भी वहाँ पहुँचना इतना आसान नहीं था। ऐसा लग रहा था कि भूलभुलैया की तरह घुमावदार ऊँची दीवारें उन्हें गोल-गोल घुमा रही हों।

वायुदेव रुक गए। प्रशान्ति के उस क्षण में, उन्हें रहस्यमय, सूक्ष्म ध्वनियाँ सुनाई दीं—ऐसा सुर जो मृदुल भी था और स्पन्दनशील भी, जिसमें हल्कापन भी था और वह सुर बुलन्द भी था, वह पूर्ण स्वर था और साथ ही गुँजायमान भी था। उन्होंने इससे पहले कभी भी इस तरह झकझोरे जाने का अनुभव नहीं किया था। उनकी पूरी सत्ता का कण-कण जाग्रत होने लगा। वह ध्वनि उन्हें उनके अपने अन्तर में ले गई और साथ ही उसने उन्हें ऐसा महसूस भी कराया कि वे आस-पास की हर एक चीज़ के साथ एकाकार हैं! यह ऐसा ही था जैसे उन्होंने उस मनोरम सुर को, उस मनोरम तत्त्व को खोज लिया हो जो शायद इस ब्रह्माण्ड का मूल ही हो। क्वेट्ज़ाल्कोट्ल अन्तर-स्पष्टता से चमक उठे, और ऐसा होते ही, उनके मार्ग में अवरोध बनी वह भूलभुलैया तुरन्त ग़ायब हो गई! अपने अन्दर ठोस निश्चितता का भाव लिए, वे अब सीधे देदीप्यमान सूर्यदेवता के मुख्य सदन की ओर उड़ चले।

वहाँ टोनाट्यू के भव्य, जगमगाते आँगन में वे संगीतज्ञ बैठे थे जो इस मन्त्रमुग्ध कर देने वाले संगीत का स्रोत थे। स्वर्णिम पीताम्बर पहने बाँसुरी वादक सुमधुर संगीत की रचना कर रहे थे, गहरे नीले वस्त्रों को धारण किए कविजन विचरण कर रहे थे, सुकून का एहसास कराने वाले श्वेतवस्त्र पहने लोरी-गायक भी वहाँ थे, और दमकते लाल रंग के वस्त्रों को धारण किए प्रेमगीत के गायक भी थे। उनका संगीत भगवान के लिए श्रद्धा-भक्ति व गहरे प्रेम से चमचमा रहा था। क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने इन संगीतज्ञों से सम्बन्धित जो कुछ भी देखा व सुना, वह सब कुछ प्रकाश, आनन्द व जीवन को अभिव्यक्त कर रहा था।

हाँ, हाँ, यही तो है जिसकी आवश्यकता धरती को है, क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने सोचा। प्रेरणा व दृढ़-संकल्प से भरे क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने अपना गीत गाना शुरू किया जिससे कि संगीतज्ञों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो। उनके गायन में करुणा व प्रेम की स्तुति थी, वह कृतज्ञता व सहानुभूति की प्रशंसा से सिक्त था, उसमें दयालुता व उदारता थी; उनकी वाणी से आशा व ललक छलक रही थी। क्वेट्ज़ाल्कोट्ल का ध्रुवपद सुनकर टोनाट्यू ने हमिंगबर्ड पक्षी के पंखों से बने अपने अयाल को

झकझोरा और बाझ के नाखूनों वाले अपने हाथों की कसकर मुट्ठी बाँध ली। गुस्से से जलते हुए, वे अपने मुख्य सदन से चलते हुए सीधे अपने आँगन में पहुँचे और जल्दी-से संगीतज्ञों को चुप कराया। उन्होंने सभी को चेतावनी दी कि यदि किसी ने भी वायुदेव की प्रलोभनकारी पुकार का उत्तर दिया, तो उनसे उनकी गर्म गुफाएँ छीन ली जाएँगी और उन्हें हमेशा के लिए क्वेट्ज़ाल्कोट्ल की ठण्डी, अँधियारी दुनिया में क़ैद कर लिया जाएगा।

चेतावनी के बावजूद, कुछ संगीतज्ञों को वायुदेवता का गीत बहुत सुमधुर और मनमोहक लगा और उन्होंने सहर्ष उसका उत्तर दिया। वायुदेवता के साथ चलने के लिए आगे बढ़ते हुए, वे संगीतज्ञ अपने साथ अपने-अपने सभी दिव्य वाद्ययन्त्र भी ले गए जैसे कि सुमधुर बहु-कक्षीय बाँसुरी जिसे *ट्लापिटज़ेली* कहते हैं और *हुएहुएटल्* व *टेपोनेज़ली* नामक ढोल जो सुनने वालों के मन में साहस और वीरता जगाते हैं।

क्वेट्ज़ाल्कोट्ल ने संगीतज्ञों को सावधानी से अपने पंखों की छत्रछाया में इकट्ठा कर लिया और वे उड़ने लगे। फिर जादुई सेतु के जगमगाते रास्ते पर चलते हुए वह तेज़ी-से नीचे उतरने लगे; उनके पंखों से वैभवशाली झरने के बहने की आवाज़ आ रही थी जो न जाने कबसे प्यासे संसार की प्यास बुझाने के लिए तैयार था।

पृथ्वी को उनके आने का आभास हो गया और उसने चैन की साँस ली। क्वेट्ज़ाल्कोट्ल शालीनता से पृथ्वी पर उतरे और सन्तोष से देखने लगे कि संगीतज्ञ अपने नए घर में उतर रहे हैं। फिर उन्होंने उन अद्भुत प्रतिभाशाली सेतु निर्माणकर्ताओं को अपनी सेवा के लिए हृदय से धन्यवाद दिया।

सभी संगीतज्ञ आश्चर्यचकित होकर इस अनोखे स्थान पर चारों ओर भ्रमण करने लगे और कुतूहलभरे उस मौन को अपने अन्दर सोखने लगे। फिर उन्होंने अपने वाद्ययन्त्रों को सँभालकर अपनी गोद में रखा और संगीत की मन्द, मृदुल तान छेड़ी। गायक दिव्य गीत गाने लगे। उनके नए-नवेले स्वर धरती, जल और वायु के सन्नाटे से होकर गुज़रे। विशुद्ध और आत्मीय, मनमोहक स्वर धरती के एक कोने से दूसरे कोने तक बहने लगे और उन्होंने अपने मीठी गूँज से सब कुछ आच्छादित कर दिया।

सदियों से चुपचाप बह रही नदियाँ अब खुशी से बुदबुदाने लगीं और किनारों से बातें करने लगीं। नदी के रेतीले किनारे पेड़ों को प्रेम से पुकारने लगे। पेड़ों ने अपने मुरझाए हुए सिर हिलाए और अपनी टहनियों पर सैकड़ों-हज़ारों पत्तियों को खोल दिया जो जीवनदायी संगीत के सुरों के साथ झूमने और घूमने लगीं। पक्षी हज़ारों तरह के गीत गाने लगे, फूल खिल गए, उनकी खुशबू फैल गई जिससे गुनगुनाते भवरें मीठे पराग की ओर आकर्षित होने लगे, तितलियों ने इन्द्रधनुष के हर एक रंग से खुद को सजा लिया।

एक-एक करके, धरती पर सभी जानवरों ने अपनी आवाज़ें खोज लीं। हाथी अपनी सूँड ऊपर करके शानदार तरीक़े से चिंघाड़े, शेरों ने दहाड़ा और सियारों ने जीत की ख़ुशी में हुआ-हुआ किया। बड़े-से-बड़े जानवर से लेकर सबसे छोटे जानवर तक, हरेक जीव ने अपना कलरव, अपना शब्द संकोचन, आघात से उभरता संगीत, रहस्यात्मक और जानी-पहचानी आवाज़ों से उठता संगीत देकर पृथ्वी की ध्वनि को जगा दिया।

और मनुष्यों को भी अपना माधुर्य व सामंजस्य मिल गया। नवचैतन्य व प्रेरणा से भर देने वाले जीवनदायी संगीत के प्रति ख़ुशी व कृतज्ञता से ओतप्रोत होकर उनके अन्दर से भी गीत प्रस्फुटित होने लगे। भगवान की स्तुति में वे नाचने लगे, गाने लगे—वे जल व अग्नि की भव्यता के लिए, ध्वनि व मौन के लिए, रात के अँधेरे और दिन के जगमगाते प्रकाश के लिए कृतज्ञता व आनन्द से भर गए।

उस समय से संगीत आत्मा की सार्वभौमिक भाषा बन गया है जिससे प्रेम, आशा, गरिमा और कृतज्ञता उदित होती है। संगीत के हर एक स्वर के अन्दर समाहित है, वह पावन ध्वनि जिसने धरती पर जीवन की शाश्वत, पोषणकारी संगीत-रचना को जन्म दिया है।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी एज़्टेक संस्कृति की एक कथा से प्रेरित है।